तात्पर्य

महर्षियों के सभी प्रामाणिक वाक्य, वैदिक मन्त्र और 'वेदान्तसूत्र' के पद इसके प्रमाण हैं कि यह संसार पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—इन पाँच महाभूतों से बना है। इनके अतिरिक्त अहंकार, बुद्धि, त्रिगुणमयी अव्यक्त प्रकृति, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (नेत्र, कर्ण, नासिका, रसना और त्वचा) तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ (वाणी, हाथ, पैर, उपस्थ और गुदा) हैं। मन सब इन्द्रियों का स्वामी है। इसे आन्तरिक इन्द्रिय कहा जा सकता है। इस प्रकार मन सहित कुल ग्यारह इन्द्रियाँ हैं। पाँच इन्द्रियविषय हैं—रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श। इन चौबीस तत्त्वों का संघात ही क्षेत्र कहलाता है। अतः इन सब तत्त्वों का तत्त्वात्मक अध्ययन करने से क्षेत्र का स्वरूप भलीभाँति जाना जा सकता है। क्षेत्र में होने वाले इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख आदि विकार पंचमहाभूतों के प्रतीक हैं, जिनसे स्थूल देह की रचना हुई है। चेतना और धृति द्वारा प्रकट जीवन-लक्षण सूक्ष्म देह अर्थात् मन, अहंकार और बुद्धि के चिह्न हैं। क्षेत्र के स्वरूप में ये सब सूक्ष्म तत्त्व आ जाते हैं।

वास्तव में पंचमहाभूत सूक्ष्म मिथ्या अहंकार की ही स्थूल अभिव्यक्ति हैं। वे प्राकृत धारणा के रूप हैं। बुद्धि चेतना की प्रतीक है और त्रिगुणमयी प्रकृति अव्यक्त अवस्था है। यह अव्यक्त त्रिगुणमयी प्रकृति ही 'प्रधान' कही जाती है।

जो विकारों के सहित चौबीस तत्त्वों को विशद रूप से जानना चाहता हो, वह इस दर्शन का अधिक विस्तार से अध्ययन करे। भगवद्गीता में तो यह संक्षिप्त-सार रूप में ही कहा गया है।

इन सब तत्त्वों से बना देह छः विकारों वाला है—उत्पत्ति, विकास, स्थिति, प्रजनन, क्षय और अन्त में नाश। अतएव यह क्षेत्र क्षणभंगुर प्राकृत वस्तु है। परन्तु इसका स्वामी और ज्ञाता, क्षेत्रज्ञ भिन्न है।

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः।।८।।
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ।।९।।
असक्तिरनभिष्वंगः पुत्रदारगृहादिषु।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु।।१०।।
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ।।११।।
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।।१२।।

अमानित्वम्=विनम्रता; **अदम्भित्वम्**=दम्भाचरण का अभाव; **अहिंसा**=प्राणीमात्र को किसी भी प्रकार पीड़ित न करना; **क्षान्तिः**=सहनशीलता (क्षमा-